What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 39	03/2017-18	MONTHLY	March 2017

Dates for your diary
(Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan)

Holi – Sunday 12th March 2017 - 11am – 1pm
Ram Navmi – Sunday 9th April 2017 - 11am-1pm

Arya Samaj Foundation Day
Sunday 9th April 2017
11am – 1pm

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)
188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS, BIRMINGHAM, B7 4SA
Tel: 0121 359 7727
E-mail– enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj		**3**
True Protectors	**By Mr Krishan Chopra**	**4**
राष्ट्र-प्रेम	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**6**
Sacrament (Sanskar 7)		**10**
अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पुरो अयोध्या ॥ (अथर्ववेद-१०.१.२.३१) ॥		**14**
Please save the original book ''Satyarth Prakash''		**18**
"सत्यार्थ प्रकाश-परिवर्त्तन "	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**20**
News (पारिवारिक समाचार)		**22**
Changes to Matrimonial Service in 2017		**25**

For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,
Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org

10 Principles of Arya Samaj

1. **God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**

2. **God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**

3. **Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**

4. **All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**

5. **All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**

6. **The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**

7. **All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**

8. **We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**

9. **One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**

10. **In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

True Protectors

वोधश्च त्वा प्रतीवोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राणश्च रक्षताम् । गोपायंश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम् ॥ अथर्ववेद ८.१.१३

Bodhasca tva pratibodhsca rakshtam asvapnasca tva navadransca rakshtam l gopayansca tva jagrvisca rakshtamll

Atharva Veda 8.1.13

Meaning in Text Order

Bodhah = wisdom
Ca= and
Tva = you
Pratibodhah = vigilance
Ca =and
Rakshtam = may protect you
Asvapnasca = observance
Ca = and
Anavadranah = keeping away from evil deeds
Ca = and
Rakshtam = may guard
Gopayan = the quality of self defense
Ca = and
Tva = to you
Jagrvih = alert
Ca = and
Rakshtam = safeguard you

Meaning

O man! May knowledge and vigilance protect you. Keep yourself safe from laziness and evil tendencies. May the quality of self defence and alertness safeguard you..

Contemplation

O man! Never consider yourself helpless in this world. Don't be despondent and don't consider yourself feeble, weak or indistinct. You might not receive human help in time but your own qualities may be able to protect you. It is up to you to utilise your own wisdom. Knowledge you have acquired from your noble teachers can help to safeguard you.

When you have sufficient knowledge then you will acquire the strength of alertness and understanding. You will have the ability to understand the unknown. You will be able to comprehend the unseen, unheard and obscure. Remember! Laziness is the greatest enemy within the self, and those who have wicked tendencies destroy their glory and all the fulfilment of life.

Therefore, it is advisable to follow the commands of the Vedas, teachings and experiences of righteous people and learn from those experiences. You have to develop the spirit of self defence and vigilance. Those who can help themselves have others who will also come to their help and those who cannot help themselves, have nobody coming to help them.. You have to be alert in this world otherwise there are many opportunists who wait to damage you.

If you adopt these qualities then there will be no fear in you and you will protect yourself, no one will be able to destroy you. You will live a long life and all your desires will be fulfilled.

By Mr Krishan Chopra

राष्ट्र-प्रेम

आचार्य डॉ. उमेश यादव

"वयं तुभ्यं बलिहृत: स्याम" अथर्ववेद १२.१.६२ इस मंत्र-भाग में सच्चे राष्ट्र-प्रेमियों की ओर से यह प्रार्थना है-" हे मातृभूमे ! हम सब तेरे पुत्र-पुत्रियाँ हैं । हम सब तेरे लिये सदैव बलिदान करने वाले बनें "। यह भाव हमें प्रेरणा दे रहा है कि जिस देश में हम उत्पन्न हुये, जहाँ के पदार्थ खाकर, पानी पीकर, और साँस लेकर हम बड़े हुये, जहाँ हमारा पालन-पोषण हुआ, जो हमारी सँस्कृति और अपनी मिट् टी है; उसके प्रति हमारी भावना सदा सेवा और वलिदान की होनी चाहिये । हिन्दी कवि ने ठीक ही कहा है-

"जो भरा नहीं है भावों से,जिसमें बहता रस धार नहीं ।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं " ॥

यह उचित ही है । जिसकी रज में लोट-लोट कर बड़े हुये हैं, घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुये हैं ऐसी मातृभूमि की सेवा के लिये हमें हर पल तत्पर रहना चाहिये । संकट की घड़ी में इसी प्रेरणा से हमारे वीर वलिदानी सैनिक हमेशा अपने प्राणों की बाजी भी लगा देते हैं जो सर्वथा उचित है । तन-मन-धन से राष्ट्र-सेवा हेतु हमें भी सदैव संकल्पित होना चाहिये । यह तभी सम्भव होगा जब हमारे अन्दर देश भक्ति बनी रहेगी । हमें देश-भक्ति की भावना मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम से लेनी चाहिये । लंका-विजय के बाद जब उनके अनुज प्रिय भ्राता लक्ष्मण ने उन्हें कहा कि अभी कुछ देर यहीं विश्राम करते हैं; साथ ही लंकापुरी पर राज्य भी स्थापित करें तब वैदिक धर्म के महान् पोषक श्री राम ने उत्तर दिया -

" अपि स्वर्णमयी लंका, न मे लक्ष्मण रोचते । जननी-जन्म-भूमिश्च स्वार्गादपि गरीयसी "॥

हे लक्ष्मण ! मुझे यह सोने की लंका अच्छी नहीं लगती । अपनी माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी अधिक सुखदायी है ।

यही बात महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में तब ही उद्घोषित किया जब 'स्वराज्य' की कल्पना तक भी नहीं किसी ने की थी और तब काँग्रेस पैदा भी नहीं हुआ था, महान् राष्ट्र-प्रेमी महर्षि दयानन्द ने लिखा- " कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है; वह सर्वोपरि उत्तम होता है । अथवा मतमतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्णसुखदायक नहीं है " । इसका साफ कारण पता चलता है कि विदेशी राज्य में हम कभी खुलकर परस्पर का पूरा उपकार और अपना अधिकार जी नहीं सकते । मानसिकता सदा ही सिकुड़ी हुयी गुलाम ही रहेगी ।

राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा- महर्षि ने अनुभव किया कि भारत गुलामी की अवस्था में अपनी अस्मिता की रक्षा नहीं कर पा रहा । विदेशी अफ्सर अपने जूते पहनकर सब जगह जाते-आते पर भारतीय पुरुष को ऐसा करने पर उन्हें विदेशी अफ्सरों से तिरस्कार मिलता था । इसी तरह स्वदेशी वस्त्रों का अपमान होते हुये महर्षि दयानन्द ने अनुभव किया । फिर विना

डर महर्षि ने अपनी पुस्तक "आर्याभिविनय" में प्रार्थना रुप में स्पष्ट ही लिखा मानो दु:खी हृदय से वे परमपिता परमेश्वर से राष्ट्र-रक्षा की प्रार्थना कर रहे हों-" अन्य देशवासी राजा देश में कभी न हो तथा हमलोग पराधीन भी कभी न हों , विदेशी राज्य जब स्वदेश में आ जाये तब स्वदेशी लोग दु:ख और दारिद्र् य में

पड़ जाते हैं "। ऐसा कहकर महर्षि ने राष्ट्र-भक्तों को जगाया । तभी तो स्वतन्त्रता की लड़ाई में आर्य समाज के सभी नेताओं ने बढ़-चढ़ कर वलिदान दिया । चाहे भगत सिंह हों या लाला लाजपत राय , चन्द्रशेखर आजाद हों या रामप्रसाद विस्मिल, ये सभी महर्षि दयानन्द की प्रेरणाओं से अत्यन्त प्रभावित थे । भगत सिंह डी.ए.वी स्कूल लाहौर के होनहार छात्र रहे तो लाला लाजपत राय आर्य समाज नागौरी गेट हिसार हरयाणा के प्रधान । अन्य भी इनके नजदीक ही रहे । स्वामी श्रद्धानन्द ने काँग्रेस के साथ मिलकर देश हित में खूब काम किया । राष्ट्र को वैदिक विचारों से जगाया । गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय,हरिद्वार की स्थापना की । राष्ट्र को वैदिक सँस्किति से एक नई दिशा और दशा प्रदान की । तभी तो कवि ने अपने उद्गार व्यक्त किया-

" शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले ।
वतन पर मिटनेवालों का बाकी यही निशाँ होगा" ॥

महर्षि की टीस- एक वार महर्षि ने एक देवी को अपने ही आँचल में मृत वच्चे को लपेटे हुये गंगा में जाकर वच्चे को बहाते देखा और आँचल को समेट कर अपना तन ढ़ँकते देखा तभी ऋषि रो पड़े । हा ! भारत की यह दुर्दशा । रात्री में सब सो रहे थे तो उस रात उन्हें नींद नहीं आयी और उठकर वेचैनी से घूमते-फिरते दिखे । सेवक के पूछने पर उन्होंने जवाब

दिया । जिस देश में इतनी गरीबी हो कि एक माँ अपने मृतक वच्चे को कफ़न भी नहीं दे सकती. भला भारत की ऐसी दुर्दशा देख कोई कैसे सो सकता है । एकबाल ने ठीक ही लिखा है-

"इक टीस जिगर में उठती है, इक दर्द-सा दिल में होता है ।
हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है ॥

जयहिन्द ! भारत माता की जय ! महर्षि दयानन्द की जय !

लेखक द्वारा लिखित राष्ट्र के लिये वैदिक कविता समर्पित

भारतवर्ष के उत्कर्ष को आगे बढ़ाना है,
हमें स्वाधीनता के मार्ग को जीवन बनाना है ।

ब्राह्मण भरे हों, ब्रह्म तेज, सत्य ज्ञान के पुजारी ,
क्षत्रीय वीर योद्धा हों, अरिदल विनाशकारी,
दूधधारी गौ-माता का पालन बढ़ाना है ।
हमें स्वाधीनता के मार्ग को आगे बढ़ाना है ॥

पशुधन बढ़े,जन-धन बढ़े,सुभग नारी, अन्न-धन बढ़े,
कपिल, कणाद्, गौतम,पतँजलि,योगी कृष्ण,राम की शान बढ़े,
राष्ट्र के वच्चे-वच्चे को यज्ञ-योग सिखाना है । हमें स्वाधीनता...

वातावरण होवे सुवासित, यज्ञ-सुगन्धि सर्वत्र आवासित,
ऋतुयें सारी होवे मनोरँजित, सही समय पर वर्षा हो,
धरती का पाप-ताप मिटै प्रभो, उमेश तिरँगा लहराना है । हमें यहाँ स्वर्ग बनाना है, हमें स्वाधीनता के मार्ग को जीवन बनाना है ।

SACRAMENT
(SANSKAR 7)

FOURTH SACRAMENT- NAAMKARAN SANSKAR (NAMING CEREMONY)

When God created this universe he gave name to everything. Not only God gave name to all lifeless objects but he ordered that all human beings should have a name for people to address him/her. So the learned priests decided to give a name to all individual children which is meaningful, sweet and easy to pronounce.

Naam Chasmai Dadyuh: - Paaraskar Grih Sutra - everyone should have a name - this is what has been called as **Naamkaran sanskar**. This Sacrament should be performed on 11th day, 101 day or second year of the birth of the child. According to their convenience parents can perform this ceremony any day after 11th day of the birth of their child. It will be ideal if parents can perform this ceremony on the above days of the birth of their child. According to Maharishi Dayanand Saraswati parents must perform this ceremony whenever convenient to them.

Yugmaani Tveva Punsaam, Ayujaani Strinaam - sanskaarvidhi by Maharishi Dayanand - In these Grih Sutras Maharishi Dayanand has suggested that boys names should have even numbers of alphabets for example 2, 4, 6 and girls names odd numbers of alphabets like 3, 5 etc. But this suggestion can be changed according to prevailing times. Quite a few Rishis names are opposite to this suggestion for example Gautam, Kapil, Kanad, Ashok, Vidur, Narad etc. Similarly Anusuya, Sita, Ganga, Yashodhra, Gargi etc. are famous women names are opposite to this suggestion. Parents should select such a name for their child which is meaningful, sweet to hear and easy to pronounce (call). Addition of surnames of parents after the first name of childlike Sharma, Verma, Gupta and Daas et cetera can also be used to follow the suggestion of Maharishi

Dayanand Saraswati. In Aashwalaayan Grih Sutra there is provision of writing Surname of Sharma for Brahaman, Verma for Kshatriya, Gupta for Vaisya and Daas for Shudra. In Naamkaran Sacrament the surname of the child will be the same as of his/her parents. But after the completion of Gurkul education and when the profession of a person is known then Acharya will decide the caste of that person. This was the system followed in Vedic period. But now days a child automatically belongs to the same caste as his/her parents. Still, on basis of Vedic teachings, a caste of a person can be changed according to the qualities, deeds and nature of that person.

Tadhitaanta Naam - Nishedh - A name selected on the basis of name of parents or Gotra (lineage) is called **"Tadhita"** for example Pandava, Raghav, Konteya, Bhargava, Vaasudev, Jaanki et cetera. Although these names have been applied for a group of people but are based on parents or lineage. So these are **Tadhita.** Pandava is not for an individual name but all Pandava sons. So this name is not correct. A name given to an individual is the correct thing.

Date - Devata and Star - Devata consideration -During the procedure oblations are offered in the name of these. These oblations direct us to the birth time of the child. So it is important to follow the date and it's Devta, star and its Devta and offer oblations under the guidance of a qualified priest. For the guidance of this procedure Maharishi Dayanand Saraswati has written a list about these in his book "Sanskar Vidhi".

Date- Devta - 1-Brahman, 2- Twastu, 3-Vishnu, 4-Yam, 5-Som, 6-Kumar, 7-Muni, 8-Vasu, 9-Shiva, 10-Dharma, 11-Rudra, 12-Vayu, 13-Kaam, 14-Anant, 15-Vishvedeva, 30-Pitar

Star – Devata - Ashvini-Ashvi, Bharanii-Yam, Krittika-Agni, Rohinii-Prajapati, Mrigshish-Som, Aadrra-Rudra, Punarvasu-Aditi, Pushya-Vrihaspati, Aashlesha-Sarpa, Magha-Pitri, Purvafalgunii-Bhag, Uttrafulgunii-Aryaman, Hasta-Savitri, Chitra-tvastta, Swati-Vayu, Vishaakhaa-Indraagnau, Anuradha-Mitra, Jyeshtaa-Indra, Mul-Niriti,

Purvashaadhaa-Ap, Utraashadhaa-Vishvedeva, Shrawan-Vishnu, Dhanisthaa-Vasu, Shatbhishaj-Varun, Purvaabhaadrapadaa-Ahirbundhaya-Revatii-Pushana.

In consideration of a name for their child the parents should consider the following alphabets of Hindi language. This is about Hindi language grammar. Cold letters like Ka, Kha, Cha, Chha, Ta, Tha, Pa, Pha et cetera. Hot letters like Ga, Gha, nga, Ja, Jha, jna, Da, Dha, Na, Ba, Bha, Ma. Ya, Ra, La, Va, Ha, and Sha, These are also called Ghosha letters as well for example Bhadra, Bhadrasen, Bhava, Bhavnaath, Haridev et cetera.

Points to consider in names of a female child - Following names are against the teachings of Vedas- Names of Stars like Rohini, Revati, Names of plants and trees like Champa, Tulsi, Names of rivers like Ganga, Yamuna, Anatyaj (Chandali), Mountains like Vindhyachali, Himalaya, Birds like Kokila, Hansa (Swan), Snakes like Sarpini, Nagini, Consigned or transmitted like Dasi, Kinkari, frightful like Bhima, Chandika et cetera. It is important to select a Vedic name for a child.

Mother gives child to father - This is an important part of the ceremony. When it is time to pronounce the name of the child then mother hands over the child to his/her father's lap and then father gives child back to his/her mother's lap.Then one recites “Om Prajaapataye Swaahaa” mantra and offers oblation. Prajaapati is another name of God and he is the Lord, protector and carer of all his people.We are all the children of God. With this thought in mind parents pray to God for the welfare of the child. Please note that it is the mother of the child who hands over the child to her husband to remind him that as a father of the child it is his responsibility to look after the welfare of his child. Understanding the thinking of his wife the husband gives the child back in the lap of his wife with assurance that he accepts his duties as a father for the education and development of his child. But father requests his wife to look after the child till he is grown up to start education. So this way in this Sacrament both parents take oath to work and have resources necessary for the future education and development of their child.

Father touches the nostril of child - The father touches the right side nostril of nose of his child and recites "Ko-asi Katmo-asi Kasyaasi Ko Naamaasi et cetera. A happy father, by reciting this Mantra, asks his child Who are you? From where have you come? Who are your parents and what is your name? In these questions lie the belief of Hindus in reincarnation. The happy and excited father asks these questions to his child in order to know about his/her previous life. Vedas support the theory of reincarnation. The father takes the child in his lap in presence of invited guests, accepts the child of his own and gives name to his child and agrees to take full responsibility of his child.

Ko-asi = you are my happiness, **Katmo-asi =** I am blessed to have you in my household **Kasyaasi =** Like everyone else you are also the child of God and **Ko Naamaasi =** you are the source of pleasure to my soul my child. By putting his hand on child's head the father blesses his child for life long happiness and promises to provide for all necessary things for the child.

Blessing - In the end of this Sacrament the priest along with distinguished guests blesses the child like this - **He Balak/Balike! Twam Aayusmaan/Aayushmati, Varchasvii/Varchasvinii, Tejasvii/Tejasvinii, Shreemaan/Shrimatii Bhuyaah.** Meaning- O child we bless you with long life, be brilliant and full of vitality, vigour and lustrous in your life and get married.

Please note that by blessing the child that in future you get married the guests are blessing the child to get married and live happily in future. This is such a beautiful blessing and is the one we all want.

Written by Acharya ji Dr Umesh Yadav in Hindi and Translated by Dr Narendra Kumar in English

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पुरो अयोध्या ॥ (अथर्ववेद-१०.१.२.३१) ॥

स्वामी दयानन्द ऋग्वेदादि भाष्य-भूमि
सरयूबाग-अयोध्या, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

धर्म प्रेमी सज्जनों,

स्वामी दयानन्द का सुप्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ १६ नवम्बर, १८६९ ई० को काशी के दुर्गाकुण्डस्थित आनन्द बाग (अमेठी के राजा की भूमि) में हुआ । राजर्षि रणंजय सिंह जी (गढ़-अमेठी) अपनी काव्य रचना में कहते हैं:-

"काशी में हलचल, मच गयी संन्यासी एकय दयानन्द आये हैं, जिनकी ललकार है ।
विद्वज्जन शास्त्रार्थ, करके यह सिद्ध करेंय मूर्तिपूजन वैदिक, सिद्धान्तानुसार है ॥
ईश्वर निराकार कभी, होता साकार नहींय लेता न अजन्मा, 'रणंजय' अवतार है ।
शास्त्रार्थ हुआ पण्डित, काशी के परास्त हुये ये मानना ही पड़ा, विद्या स्वामी में अपार है ॥"

पूरे देश-देशान्तर में स्वामी दयानन्द की यश-पताका फहरा गयी । तत्पश्चात् अनेक स्थानों पर विभिन्न मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ हुये और स्वामी जी ने वैदिक तर्क वाणी से सभी को परास्त किया । हरिद्वार के कुम्भ मेले में पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराई । १२ जून १८७४ ई० से काशी में ही "सत्यार्थ प्रकाश" अमर ग्रन्थ की रचना प्रारम्भ की और प्रथम संस्करण वैदिक यन्त्रालय प्रयाग से प्रकाशित हुआ । इसके बाद १८७५ ई० में मुम्बई के गिरिगाँव स्थित काकड़वाड़ी में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की ।

स्वामी दयानन्द ने अपने समस्त साहित्य में 'मनुस्मृति' के कुल लगभग ४६० श्लोकों को यत्र-तत्र प्रमाण में प्रस्तुत किया है । धर्म के लक्षणों में मनुस्मृति के दश लक्षणों को प्रमाण माना है तथा महाभारत के '' अहिंसा परमो धर्मो" कहकर कुल ग्यारह लक्षण माने हैं । परन्तु धर्म के लिये परम प्रमाण वेद को माना है । यथा-

वेदोऽखिलो धर्ममूलम् ॥ (मनुस्मृति ॥ धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥ (मनुस्मृति) ॥

वे वेद पढ़ने का अधिकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र तथा स्त्रियों आदि को देते हैं । इस विषय में यजुर्वेद का मंत्र "यथेमां वाचं कल्याणीं आवदानि जनेभ्य:" का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं । चारों वेद के एक मात्र अंग्रेजी अनुवादक, वैज्ञानिक, संन्यासी स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती जी कहते हैं-वेद मानव मात्र के लिये हैं । जिन्हें 'अ', 'उ' और 'म्' तक बोलने या समझने अथवा सुनने की क्षमता परमात्मा ने दी है उन सबके लिये वेद का ज्ञान है । स्वामी दयानन्द के समस्त सिद्धान्तों में वेद सर्वोपरि है I पं. युधिष्ठिर मीमांसक का कहना है कि स्वामी दयानन्द के समस्त साहित्य में या कार्यों में ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा वेद भाष्य का कार्य सर्वश्रेष्ठ है । यहाँ तक कि सत्यार्थ प्रकाश से भी अधिक महत्त्व वेद भाष्य का है । स्वामी दयानन्द भी अपने आर्य समाज के दश नियमों में कहते हैं- " वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।"

पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने अपने १९४९ ई० में प्रकाशित 'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास में पृष्ठ ९६ में लिखा-ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रन्थ की रचना की । यह भूमिका चारों वेदों के करिष्यमाण भाष्यों की है, यह इसके नाम से प्रगट है । यजुर्वेद भाष्य में ऋषि ने लिखा है:- "और सब विषय भाष्य भूमिका में प्रगट कर दिया , यहाँ देख लेना । क्योंकि उक्त भूमिका चारों वेदों की एक ही है ।"-यजुर्वेद भाष्य पृष्ठ-८

ऋषि ने जिस समय भूमिका का प्रारम्भ किया उस समय वे अयोध्या नगर में विराजमान थे । पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय द्वारा संगृहीत जीवन चरित्र पृष्ठ ३७५ पर लिखा है -

"भाद्र कृष्ण १४ सं० १९३३ वि० अर्थात् १८ अगस्त १८७६ को स्वामी जी अयोध्या पहुँच कर

सरयूबाग में चौधरी गुरूचरण लाल के मंन्दिर में उतरे । अयोध्या में भाद्र शुक्ला प्रतिपदा सं० १९३३ वि० अर्थात् २० अगस्त १८७६ ई० को ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका का लिखना

प्रारम्भ हुआ ।"

ऋषि ने मार्ग शीर्ष शु० १५ सं० १९३३ वि० को स्वीय वेदभाष्य के प्रचारार्थ एक विज्ञापन प्रकाशित किया था - "सम्वत् १९३३ वि० मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णमासी (१ दिसम्बर १८७६) पर्यन्त दश हजार श्लोकों प्रमाण भाष्य बन गया है ।" इस प्रकार स्वामी जी ने १ दिसम्बर १८७६ को ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका सरयूबाग अयोध्या में पूरी की ।

आर्य समाज टाण्डा-अम्बेडकर नगर का शताब्दोत्तर का रजत जयन्ती समारोह १० नवम्बर से १४ नवम्बर २०१६ को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया । इस समारोह के लोगों में अयोध्या का वर्णन देखकर राजस्थान के माननीय लोकायुक्त आर्य न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह कोठारी सपत्नीक सरजूबाग गये और उन्होंने टाण्डा आकर उस स्थान को खरीदकर स्मारक बनाने की बात कही ।

सरयूबाग स्थित गुरूचरण लाल उपाध्याय के वंशज रहते हैं । उनके मन्दिर के ठीक सामने संयोग से भूमि विक्री हेतु आवादी के अन्तर्गत मो० इरफान अंसारी की है । इस भूमि के पास एक गर्ल्स कॉलेज संचालित है । मेडिकल कॉलेज का बनना प्रस्तावित है । यह परिक्रमा पथ के साथ संलग्न स्थित है ।

श्री अंसारी जी के साथ श्री आनन्द कुमार आर्य (टाण्डा), पं. दीनानाथ शास्त्री (अमेठी), डॉ. नागेन्द्र कुमार शास्त्री (गुरूकुल अयोध्या), श्री हिमांशु त्रिपाठी एडवोकेट (प्रधान-आर्य समाज, फैजाबाद), परशुराम पाण्डेय, चौधरी आनन्द कुमार एडवोकेट (डालीगंज लखनऊ), आदि ने निगोशिएसन के उपरांत ३०,००० (तीस हजार) वर्गफुट जमीन क्रय हेतु मूल्य का निर्धारण किया जो वास्तविक मूल्य से काफी कम पर मिल रही है । १ करोड़ १२ लाख रू. भूमि का मूल्य है । रजिट्री तथा बाउण्ड्रीवाल एवं कार्यालय के निर्माणार्थ प्रथम दृष्टया १.५ करोड़ रूपये की आवश्यकता है ।

अपील- आर्य जनों! सरयूबाग अयोध्या की यह भूमि ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य की जन्म भूमि है । ऋषि से सम्बन्धित अन्य समस्त स्थलों से अधिक महत्त्व की है । न जाने,

अभी तक किसी आर्य मनीषी की दृष्टि यहाँ क्यों नहीं पड़ी? यदि इस समय क्रय नहीं किया जाता है तो भविष्य में यह भूमि नहीं मिल पायेगी तथा आने वाला इतिहास वर्तमान सभी आर्यों को माफ नहीं करेगा ।

अस्तु, यह अयोध्या जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम आर्य श्री राम की जन्म भूमि है वहीं सरयूबाग अयोध्या महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य की जन्म भूमि है ।

संकल्प- तो आइए, हम सभी देश-विदेश के दानी आर्य जन इस महती कार्य में अधिक से अधिक "शत हस्त समाहर । सहस्र हस्त संकिर ॥ " की पवित्र भावना से दान देकर रू० १.५ करोड़ की आवश्यक प्रारम्भिक राशि की यथाशीघ्र पूर्ति करें और यश के भागी बनें ।

-:निवेदक:-

प्रेरणा:- लोकायुक्त आर्य न्यायमूर्ति सज्जन सिंह कोठारी ।

आनन्द कुमार आर्य (टण्डा), पं. दीनानाथ शास्त्री (दायाद शिष्य स्वामी सत्य प्रकाश), डॉ. नागेन्द्र कुमार शास्त्री (गुरूकुल अयोध्या), श्री हिमांशु त्रिपाठी एडवोकेट (प्रधान-आर्य समाज, फैजाबाद), परशुराम पाण्डेय, चौधरी आनन्द कुमार एडवोकेट (डालीगंज लखनऊ), डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री (अमेठी), डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री (रायबरेली) आदि-आदि.....।

स्थानीय निवेदक

प्रधान	**मंत्री**
डॉ. नरेन्द्र कुमार	**बृजबाला दुग्गल**

एवं समस्त सदस्य गण
बोर्ड ऑफ ट्रस्टी-आर्य समाज वेस्ट्मिड्लैंड्स, बर्मिंघम (यू.के.),
१८८ इन्करमन स्ट्रीट, निचेल्स, बी ७ ४एस.ए.

PLEASE SAVE THE ORIGINAL BOOK "SATYARTH PRAKASH"

Dear Members of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands

Some office bearers of Paropkarini Sabha, Dayanand Ashram, Kesarganj, Ajmer-305001 (Rajasthan), India have made totally unnecessary distorted, mutilated and corrupt changes in the 37th, 38th, 39th and 40th edition of sacred book **"Satyarth Prakash"** written by Swami Dayanand Saraswati in year 1883 and printed as second edition in year 1884. These bad changes have destroyed the true meaning and knowledge contained in the book, as written and desired by the original writer Swami Dayanand Saraswati.

Since 1884 and till 1990 **"Satyarth Prakash"** has been printed as written by Swami Dayanand Saraswati in 1883. It is since year 1991 when Paropkarini Sabha office bearers started their unforgivable practice of altering the contents in **"Satyarth Prakash"** in name of modernising the language and improvement.

This sin is totally unforgivable and intolerable and to tolerate this happening is a bigger sin.

A true follower of Vedas and teachings of Maharishi Dayanand Saraswati can not tolerate these actions of few irresponsible officials of Paropkarini Sabha in India.

The case against these irresponsible individuals is pending in District Court of Ajmer, India.

The members of Arya Samaj community in India have already spent about £8000 on this case.

Now it is paramount duty of us to help the team fighting this court case in India with all the means at our disposal.

According to the present situation we need to collect about £10,000 to send to India.

So we appeal to all of you to donate generously towards this very worthy cause.

The office bearers of Arya Samaj West Midlands are committed to fight this just cause.

You can write to Paropkarini Sabha to express your views on **psabhaa@gmail.com**

We have to save the immortal book of **"Satyarth Prakash"** of Swami Dayanand Saraswati at any cost. It is our paramount duty to do this.

You can write the cheque in name of **"Arya Samaj West Midlands" and post it to Arya Samaj West Midlands, 188 Inkerman Street, Nechells, Birmingham, B7 4SA.**

Arya Samaj West Midlands will always be grateful for your contribution in this matter.

Yours sincerely

Dr. Narendra Kumar
Chairman
The Board of Trustees

Mrs. Brij Bala Duggal
Secretary
The Board of Trustees

ओ३म्

"सत्यार्थ प्रकाश-परिवर्त्तन "

आचार्य डॉ. उमेश यादव

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमरग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा यत्र-तत्र किये जा रहे परिवर्त्तन का षडयंत्र

निवेदन- २ रा संस्करण जो दिसम्बर १८८४ में प्रकाशित हुआ , वही शुद्ध है, महर्षि द्वारा स्वयं परिशोधित है और प्रमाणरुप अजमेर में इसकी मूल प्रति भी रखी हुयी है । हम सब को यही मानना चाहिये लेकिन कुछ लोग मिलकर इसमें यत्र-तत्र छेड़-छाड़ कर रहे हैं जो परोपकारिणी सभा , अजमेर के उच्च पदों पर आसीन अधिकारी एवं कुछ अन्य भी हैं । यह छेड़-छाड़ सर्वथा अनुचित है, आर्यों द्वारा कदापि मान्य नहीं होगा । निम्न प्रसंगों को पढ़कर आप स्वयं समझ जायेंगे कि उक्त छेड़छाड़ सही में गलत है; इसे हमें रोकना ही चाहिये । आओ ! आप भी इसे समझें और सत्यार्थ प्रकाश का सच्चा भक्त बनकर इसकी रक्षा में हमें तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग करें । हम इस रक्षा-अभियान में पहले से ही सक्रिय हैं पर इसमें आपका सहयोग भी अपेक्षित है ।

१. ऋषि की भाषा में -" इसलिये इस ग्रन्थ को भाषा व्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी बार छपवाया है ।-भूमिका-प्रकरण पेज-३

परिवर्त्तन- " इसलिये इस समय इसकी भाषा पूर्व से उत्तम हुयी है"

नोट- भाषा पूर्व से उत्तम हुयी है-ऐसा कहना ऋषि के व्याकरण व उनकी भाषा पर अविश्वास करना प्रकट होता है; इससे यह भी लगता है कि भाषा और भी उत्तम हो सकती है जबकि महर्षि ने स्पष्ट लिखा है कि "इस ग्रन्थ को भाषा व्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी बार छपवाया है "। मित्रों, इस कारण उक्त परिवर्त्तन की जरूरत ही नहीं थी । यह तो स्पष्ट छेड़छाड़/षडयंत्र है ।

२. ऋषि की भाषा- वहीं इससे पहला वाक्य देखें " अब भाषा बोलने और लिखने का अभ्यास हो गया है ।"

परिवर्त्तन- " अब इसको अच्छे प्रकार भाषा के व्याकरणानुसार जानकर अभ्यास भी कर लिया है ।"

नोट- यह खिलवाड़ नहीं तो और क्या है ? ऋषि के मूल कथन में आधिकारिक विश्वास झलकता है कि वे दावा करते हैं कि उन्हें न केवल भाषा को बोलने वल्कि भाषा को व्याकरणानुसार लिखने का भी पूर्ण अभ्यास था । अत: परिवर्त्तन करने का कोई मतलब नहीं है अपितु ऋषि का लिखा मूल वाक्य ही सही है ।

प्रिय पाठक गण, इस प्रकार लगभग एक हजार से भी उपर अनेकानेक स्थानों पर परिवर्त्तन किया हुआ प्राप्त है । यह सत्यार्थ प्रकाश के ३७, ३८ और ३९ वें संस्करण में परिवर्त्तन प्राप्त है और आगे भी ४०वें में भी किया है ; ऐसा दु:साहस किये ही जा रहे हैं जो सर्वथा गलत है; ऐसा होने से हमें रोकना ही होगा । आगे भी क्रमश: हम आपको इन परिवर्त्तनों के वारे में इस बुलेटिन के माध्यम से इसी प्रकार अवगत कराते रहेंगे ।

News

Get Well Soon:

- **This is to inform our members and readers that our Patron Shri Gopal Chandra MBE is recovering in Ryland View Nursing Home, Arnhem Way, Tipton, DY4 7HR and telphone number 0121 520 1577. We all wish him a speedy recovery.**

Many congratulations to all the following mentioned families who have had auspicious havan at their residences on different occasions or Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.

Sponsors:

- **Dr. Chetan Verma and family for being Yajman on Sunday 22nd January 2017 in Arya Samaj. Havan for 13th birthday celebration for their son Eshan Many many congratulation to all of family and blessings to the son Ishan.**

- **Mrs. Anita Rastogi and Dr. Amit Rastogi (Sister and brother) and whole of family for being Yajman on Sunday 5th February 2017 in Arya Samaj. Havan in sweet memory of Late Dr. Renu Rastogi (beloved mother of Anita and Amit) on her 2nd Death anniversary. May God keep her in His divine shelter and grace this whole family for all glory.**

Donations to Arya Samaj West Midlands

- **Dr. Chetan Verma with Rishi-Langar £240**
- **Mr. Vivek Vadhva And Mrs. Renu Vadhva £501**

- **Mr. Krishan Talwar £51**
- **Mrs. Rekha Gupta £51**
- **Mrs. Asha Mehra £11**
- **Mrs. S.R. Sethi £21**
- **Anonymous £100**
- **Dr. & Mrs. K Soni £25**
- **Mrs. Krishna Khurana £50**
- **Mrs. Gurbaksh Kaur £20**
- **Mr. Ashok Bakshi for Rishi-Langar £70**
- **Dr. Umesh Kathuria £51**
- **Mrs. Indu Sharma £100**
- **Dr. Amit Rastogi with Rishi Langar £260**
- **Mrs. Minu Agarwal for Rishi Langar £10**
- **Mrs. Asha Verma for Rishi Langar £10**
- **Mr. Prem Nanda £21**
- **Mr. Inderjit & Satya Sharma £20**
- **Mr. Rajesh Salota £10**
- **Mr. J.P. Sethi £21**

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services.

- **Mr Dinesh Joshi £51**

Thank you for all your Donations!

Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on 0121 359 7727 for more information on

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**

- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**

- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**

- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**

- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 5th March 2017 & 2nd April 2017.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

Changes to Matrimonial Service in 2017

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is dedicated to its matrimonial members to provide a service that will help members find a partner for marriage within our community. We feel it is time to make a few changes to help with this process and move forward with the times.

Changes that will be made in 2017 are:

Website:-

- A new data base on the website that will give members an option to add a **photo** if they wish and a space for members to write a **bio** about themselves and what they are looking for in a partner.

Matrimonial Service:-

- Members will be given the option for contact numbers between parents or boys and girls can directly contact each other themselves.

- All members and contact person will be contacted by office staff for a phone conversation during the application process.

- We are also looking in to ways of making our Matrimonial events more successful.

We are looking of ways to help our members the best we can, within our limits. If you have any suggestions please get in touch with Raji either by phone, post or email. Contact details and office hours are on the front page and page 2.